शिक्षा के अवरोधक एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा को प्रभावी बनाने के नवीन कदम

प्रो.बी.एल.जैन

विभागाध्यक्ष,शिक्षा विभाग

जैन विश्व भारती संस्थान,लाडनूं,नागौर,(राज.)

सारांश - वर्तमान शिक्षा के विकास में कुछ कारक ऐसे हैं, जो शिक्षा प्राप्त व्यक्ति भी बिना शिक्षा प्राप्त व्यक्ति जैसा प्रतीत होता है| शिक्षित होने के बाद भी गलत आदतों का शिकार जैसे- धूम्रपान, मद्यपान, कषाय आदि| ये विकार और विकृति शारीरिक और मानसिक रूप से हानिकारक है| शिक्षा के माध्यम से जिन व्यक्तियों को ज्ञान दिया, उसके प्रतिफल में काफी मात्रा में निकृष्टतम व्यक्ति दृष्टिगोचर हो रहे हैं| शोधपत्र लेखनकर्ता के मन में यह विचार उद्वेलित हुआ और उनके अवरोधकों को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उन्हें कम करने हेतु क्या गतिविधियाँ वर्णित की हैं आदि का विवेचन इस शोधपत्र में किया है|

शब्दावली - उपाधि, प्रतिकूलता, व्यावहारिकता, एकाग्रता, अंधी पुनरुक्ति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति|

प्रस्तावना- देर तक अध्ययन करने की आदत, सुबह लेट तक जागने का प्रोग्राम, बिस्तर में बैठ कर तथा लेट कर पढ़ना, ईश्वर की आराधना या आस्था का सूखापन, अव्यवस्थित दिनचर्या, घर के कार्यों में अरुचि, व्यवहारिक ज्ञान का अभाव, छोटे-बड़े के मान-सम्मान की दुर्दशा, पाश्चात्य रहन-सहन, फास्ट फूड का खाना, मादक पदार्थों का सेवन, नशीले पदार्थों का भोग, घरवालों की अपेक्षाओं के विपरीत व्यवहार, मोबाईल प्रयोग का अतिवाद, अश्लील व नग्न चित्रों की कामुकता का वर्धन, मूल्य हीनता, मूल्य संकट, मूल्य दुर्दशा आदि को रेखांकित करने वाली शिक्षा पद्धति |

शैक्षिक मठाधीश, राजनीतिक और रूढ़िवादी सामंतों की सोच ने शिक्षा को हाशिए पर लाकर खड़ा कर दिया है| नई शिक्षा नीति को लाने से शिक्षा में सुधार हो जाएगा, ऐसा सोचना भ्रामकता है| शिक्षा को माफिया, दलाल, ठेकेदार, मुनाफाखोरों से बचाना है| शिक्षा के स्तंभ जब तक मजबूत नहीं होंगे, तब तक परिवार, समाज और राष्ट्र समुचित विकास नहीं कर सकता है| पुराने मूल्यों को दरकिनार करके नए मूल्यों को सजाना उचित नहीं है| पुरातन एवं नवीन दोनों मूल्यों में संबंध बैठाकर शिक्षा को संचालित करना है| यह ऐसा प्रयोग है जो मानव को अंधेरे से उजाले की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, असत्य से सत्य की ओर गतिमान करती है|

सोच की बूढ़ी हड्डियों में संभावना का नया सूर्योदय|

शिक्षा की प्रत्येक किरणों से मानव में उजालों का दिया जले|

उद्देश्य-

- शिक्षा की उपाधि की सार्थकता से अवगत कराना|
- शिक्षा की प्रतिकूलता से ओतप्रोत कराना|
- शिक्षा की व्यावहारिकता एवं अनुशासन से ओतप्रोत कराना|
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नवीन कदम से परिचय कराना|

उपाधि में सार्थकता का अभाव –शिक्षा में डिग्री, उपाधि मिलना बहुत आसान हो गया है| लेकिन यह उपाधि भीतर के खोखलेपन, थोथेपन, अज्ञानता अपवित्रता, अपात्रता, विकार आदि को दूर करने में सहायक सिद्ध नहीं है| जिस विषय में उपाधि मिली, उस विषय में ज्ञान, अनुभव एवं कौशल दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है| उपाधियाँ शिक्षार्थियों के पास अनेक है, लेकिन ज्ञान का अधूरापन, मूल्यों की अपूर्णता, संस्कार व संस्कृति की विरूपता, विशेषज्ञता का अभाव आदि से युक्त उपाधिधारक शिक्षार्थियों की बढ़ोतरी दिनोंदिन हो रही है| उपाधि प्राप्त विद्यार्थियों में ज्ञान के बढ़ने के साथ समझ भी बढती है और अनुभव में परिपक्वता आती है| प्रैक्टिकल ज्ञान का संवर्धन होता है| लेकिन इन सब का अभाव अधिक दिखाई दे रहा है, फिर हमारी शिक्षा अज्ञान से मुक्ति कराने वाली कैसे होगी? दृष्टि दोष को तो चिकित्सक ही ठीक कर सकता है| लेकिन दृष्टिकोण या सोच को तो शिक्षक या दार्शनिक बदलता है| दृष्टिकोण बदलने के बाद ही उपाधि दिये जाने पर ही हमारी उपाधि की सार्थकता होगी| उपाधि जीवंत, सतत, गतिशील करने का उपक्रम है| अनुत्पादक शिक्षा, रट्टू तोता बनाने की चाल, बेरोजगारी पैदा करने वाली उपाधि आज की शिक्षा पद्धति में गतिमान है|

कड़वाहट से भरी शिक्षा- शिक्षा में संस्कार, मूल्य, शुचिता दी होती तो घृणा, हिंसा, अधर्म कैसे पनपता? आम की गुठली बोने पर नीम की निवोड़ी पैदा नहीं होती है| बीज ही गलत बोया है तो फल भी गलत पैदा होंगे| बीज का कड़वापन होने का मतलब है फल का कड़वापन होना| शिक्षा प्राप्त व्यक्ति दिनभर क्रोध, हिंसा, बेईमानी, चोरी, कपट, छल, प्रपंच, ठगी, जालसाजी के कार्य कर रहा है| अनपढ़ व्यक्ति शोषण का शिकार बन रहा है| केवल मानव, मानव का ही शोषण नहीं कर रहा है, अपितु प्रकृति का भी शोषण कर रहा है| उस प्रकृति को विकृति में लाने का प्रयास तथा उस विकृति से ही संस्कृति का निर्माण हो रहा है| शोषण को ही सेवा बना लिया है| हिंसा अहिंसा का, अधर्म धर्म का, विकृति संस्कृति का, पाप पुण्य का, अशुभ शुभ का, चोर ईमानदारी का, भ्रष्ट शिष्टता का मुखौटे पहने हुए है|

वास्तविकता में प्रतिकूलता- शिक्षाशास्त्र तो सिद्धांतों से अवगत करा रहा है, वास्तविकता में प्रतिकूलता दृष्टिगोचर हो रही है| सही-सही रूप में तथा गलत-गलत रूप में नहीं आ रहा है| शिक्षा की दोलायमान स्थिति चित्त को भ्रामक स्थिति में ले जा रही है| अभिव्यक्ति समाधान की अपेक्षा समस्या के रूप में दृष्टिगोचर हो रही है| निष्पक्ष और निर्दोष सजा भोग रहे है| सही और गरीब व्यक्ति का जीवन दूभर हो रहा है| शिक्षा समाधान की अपेक्षा स्वयं समस्या के रूप में खडी है| शिक्षा प्राप्ति के बाद समस्याएँ कम होनी चाहिए, जबकि समस्याएं बढती जा रही हैं| व्यक्ति के आचार व विचार ही भिन्न हैं, व्यक्ति स्वविरोधी स्थिति में है| समस्याएं भीतर है, समाधान बुद्धि में है| समस्याओं के समाधान थोपे जाते हैं| शिक्षा को रटने पर बल दिया जा रहा है, उसे समझने व जीवन का अंग बनाने पर नहीं| शिक्षा चित्त को जगाने, भरने और जागरुक करने का कार्य करती है| शिक्षा ज्ञान, आनंद और सौंदर्य से परिपूर्ण करती है| दूसरे के विचारों को सीख लेना, दूसरों की किताबों को पढ़ लेना, दूसरों की बातों को सुन लेना, दूसरों की क्रियाओं को देख लेना ही शिक्षा नहीं है| शिक्षा संदेह को मंथन द्वारा सही आकलन करना है|

जैसे फल रहित वृक्ष और गंध रहित पुष्प व्यर्थ है, उनका कोई महत्व और उपयोगिता नहीं है, इसलिए वे निरर्थक हैं| वैसे ही मानव सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र के बिना निरर्थक है| जर, जोरू और जमीन के चक्कर में मनुष्य ने अपना जीवन जर्जर कर लिया है| यह जर मानव जीवन को विनाश की ओर अग्रसर करती है|

व्यावहारिकता का अभाव - वृक्ष की वृद्धि, पुष्पोत्पत्ति व फलदान वृक्ष की जड़ पर निर्भर है| पुष्प व फूलों को पानी से धोने पर चमक तो ले सकते हैं, लेकिन कुछ दिन बाद जड़ का पानी सूख जाएंगा और वृक्ष की पत्ती, पुष्प और स्वयं वृक्ष सूख जाएगा| वैसे ही शिक्षा व्यवहारिक नहीं होने पर शुष्क हो जायेगी|

चित्त की एकाग्रता का अभाव - पेट को भूख लगी है, तो चित्त पेट तक चला जाता है| पैर में कांटा लगा है, तो चित्त पैर की तरफ चला जाता है| किसी घर में आग लगी है, तो हमारा चित्त तुरंत उस आग की ओर चला जाता है| क्योंकि चित्त एकाग्र हो जाता है, तो सब विस्मित हो जाते हैं| लेकिन आज ज्ञान एकाग्र होकर प्राप्त नहीं किया जा रहा है| अस्त-व्यस्त जीवन में शिक्षा त्रस्त के रूप में दृष्टिगोचर हो रही है|

समय का दुरूपयोग - शिक्षा में वर्तमान में किये गये कार्य से भविष्य का निर्माण होता है| आज का दिन तीन घंटे टी.वी. में पिक्चर देखने, एक घंटा दोस्तों से गप्पे या गपशप लगाने, एक घंटे भोजन करने, एक घंटे मोबाईल देखने में व्यतीत कर दिये तो भविष्य के लिए इन कार्यों से ज्ञान में क्या वृदिध होगी| आज की प्राप्त शिक्षा ही भविष्य का प्रतिफल होगी| आज का कर्मफल भविष्य के लिए कर्मफल होगा| आज का बोया बीज भविष्य के लिए फल प्रदान करने वाला होगा| जैसे अग्नि में सिका हुआ बीज कभी फल देने में सक्षम नहीं होता है, वैसे ही व्यर्थ कार्यों में गंवाया हुआ समय कभी सार्थक एवं उपयोगी नहीं हो सकता| जीवन निर्माण का समय पच्चीस वर्ष की अवस्था तक ही होता है | बाद का समय जीविकोपोर्जन में ही व्यतीत होता है|

अंधी पुनरुक्ति- शिक्षा वह है जो विद्यार्थियों में स्वतंत्र चिंतन करना सिखाती है| पुस्तक या शिक्षक के आधार पर विचारों का ही ढांचा निर्मित करना अंधी पुनरुक्ति है| विचारों में समान ढांचा नहीं बनाया जाए, अपितु मुक्त चिंतन धारा प्रवाहित की जाए| स्वतंत्र चिंतन हमारे अंदर है, लेकिन शिक्षा में यह शिक्षक के विचार तक ही चिंतन को सीमित कर दिया जाता है| परतंत्रता के इस यंत्र से शिक्षा को मुक्त कर स्वतंत्र चिंतन करने के बीज बोने का प्रयास करना चाहिए|

बाह्य अनुशासन से जड़ता- बालक में विवेक आ गया, स्वतंत्र चिंतन करना सीख गया तो उसके जीवन में अनुशासन थोपने के बजाय स्वत:स्फूर्त अनुशासन पैदा हो जाता है| क्योंकि उसके अंतःकरण में वह समा जाता है| परतंत्रता की प्रतिक्रिया स्वछन्दता लाती है| दूसरों से आया अनुशासन परतंत्र होता है| स्वत: आया अनुशासन हर समय सजगता, सतर्कता, सहजता और आनंद प्रदान करता है| बाह्य अनुशासन को विद्यार्थियों पर नहीं थोपना चाहिए| स्वतंत्रता सृजनात्मकता है| स्वच्छंदता विध्वंसात्मक है| बाह्य अनुशासन से जड़ता, बुद्धि हीनता, मूल्य हीनता, अनुशासन हीनता, उद्दंडता, अनाज्ञाकारिता के गुण समाविष्ट होते हैं| हर धर्म व संप्रदाय अपने बच्चे को अपने धर्म व संप्रदाय की जंजीरों में बांधकर रख रहा है| इससे शिक्षा जाति और धर्म से संकीर्ण होती जा रही है|

शिक्षक का शोषण– शिक्षक को अनेक शब्दों से महामंडित किया है, लेकिन उनको इतना मान, सम्मान व आदर नहीं मिल पा रहा है| काफी शिक्षक ज्ञानवान है, लेकिन उनको कम वेतन देकर आर्थिक शोषण संस्थाएं करती हैं| अधिकांश संस्थाएं वेतन में कम राशि लेने वाले शिक्षकों को रखती है| वह भूखा शिक्षक कैसे मूल्यों पर कार्य कर पाएगा? उसे भी इस महंगे समय में बच्चों को पढ़ाना तथा घर के खर्चे चलाने होते हैं| इसी कारण शिक्षा की दयनीय स्थिति है|

प्रतिरोध प्रदान की गई शिक्षा में प्रतिरोध की मात्रा अधिक है जो सिखाया जाता है, वह समाज में दिखाई नहीं देता है| शिक्षा में प्रतिरोध शारीरिक शक्ति का क्षरण है जो शरीर में रोगों को प्रवेश कराने में सरल बन जाता है| अतः प्रतिरोध या दूसरों की कमजोरियां नहीं ढूंढनी चाहिए अन्यथा शरीर, मन और बुद्धि के अंदर बिना बुलाए मनोरोग प्रवेश कर जाते है| आशावादी भावात्मक चिंतन अपनाते है| निराशावादी

नकारात्मक चिन्तन का सहारा लेते है| प्रतिकूल परिणामों की चिंता नहीं करनी चाहिए और गलत आदतों के शिकार नहीं बनना चाहिए| शिक्षा कभी भी नहीं सिखाती हाथ पर हाथ धरकर बैठना और भाग्य को कोसना लेकिन आज ऐसा हो रहा है|

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा को प्रभावी बनाने के नवीन कदम- राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा-

प्रथम स्टेज-कक्षा 3-5- इनोवेशन क्लब बनाना, ग्रीष्मकालीन अवकाश में इनोवेटिव गतिविधियों को आयोजित करना| इसमें केस स्टेडी, डिज़ाइन थिंकिंग, क्रिटीकल थिंकिंग के माध्यम से स्वयं करके देखना|

दिवतीय स्टेज-कक्षा 6-8- प्रत्येक सप्ताह दो घंटे नवाचार की गतिविधियाँ कराना, अध्ययन कराये जाने वाले विषय को एक्स्पीरिमेंटल लर्निंग से सिखाना, रोजगार के रूप में कार्यक्रम करवाये जाना, इंटर्नशिप प्रोग्राम प्रारम्भ करना इससे प्रैक्टिकल नॉलेज दिये जाना|

तृतीय स्टेज-कक्षा 9-12- व्यवसायिक शिक्षा देना, ग्रीष्मकालीन अवकाश में उद्योगों में कार्य करना, कारखानों में काम करना, स्कूलों में बिजनेस इन्कुवेशन सेंटर खोलना, इनोवेशन काउन्सिल बनाया जाना निहित है|

उच्च शिक्षा में ज्ञानसृजन और अनुसंधान की भूमिका हो तथा निम्न क्षेत्रों में सशक्त बनाने वाली हो-

- जलवायु परिवर्तन
- डिजिटल बाजार
- मशीन लर्निंग
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता
- जैव प्रौद्योगिकी
- सामाजिक चुनौतियां
- रोजगारपरक
- कौशलात्मक
- मूल्यपरक
- स्मार्ट लर्निंग

IJSER

निष्कर्ष- शिक्षा हमें राष्ट्र के सर्वोत्तम के लिए अच्छा करना और एक निकृष्टतम के लिए तैयार रहने और उसमें सुधार करना सिखाती है| मेरे समान ही छात्र का ज्ञान बना रहे, शिक्षा नहीं है| "**बाप से बेटा आगे निकले**" पद्धति को शिक्षक लेकर के आए तब हमारी शिक्षा संवर्धक और सार्थक होगी| शिक्षा कौशलात्मक, मूल्यपरक, नवाचार, पर्यावरण संरक्षित, स्मार्ट लर्निंग, रोजगारपरक, व्यवहारिक, प्रायोगिक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव प्रौद्योगिकी, समय का सदुपयोग आदि का मजबूत अवबोध और क्रियान्वयन कराने वाली होनी चाहिए| सुनियोजित दिनचर्या, अच्छे संस्कार, अच्छी आदत, प्रमाणिक उपाधि, सामंजस्यपूर्ण कार्य पद्धति, व्यावहारिकतापूर्ण शिक्षा, समय प्रबंधन, समय सदुपयोग, श्रेष्ठ शिक्षकों का चयन, नैतिक और चरित्रवान शिक्षक, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अक्षरश: पालन शिक्षा को मजबूत करने वाले पायदान के रूप में होगा और शिक्षा के अवरोधक को दूर करने में सार्थक हो| शिक्षा चित्त को जगाने, भरने और जागरुक करने का कार्य करती है| शिक्षा ज्ञान, आनंद, सौंदर्य से परिपूर्ण करती है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1. आचार्य, महाप्रज्ञ (2008).जीवन विज्ञान शिक्षा के नये आयाम. कला भारती. नवीन शाहदरा. दिल्ली-32
2. आचार्य, तुलसी (2008).शिक्षा को बनाएं विकास और आनन्द की दीक्षा. पवन प्रिंटर्स. नवीन शाहदरा. दिल्ली-32

3. पुरोहित, जगदीश नारायण (2007) शिक्षण के लिए आयोजन. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
4. सिन्हा, अरविन्द (2006) आपका व्यक्तित्व आपकी सफलता, रामचन्द्र अग्रवाल जयपुर पब्लिशिंग हाउस, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003
5. ओशो. (2005 छठां संस्करण). शिक्षा में क्रान्ति. ताओ पब्लिशिंग प्रा.लि. 50 कोरेगाँव पार्क. पुणे

IJSER